International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 7.150, Volume 06, No. 02(II), April - June, 2024, pp. 53-57

सोजत परगने का सांस्कृतिक इतिहास –एक परिचय

Ravindra Panwar*

प्रस्तावना

भारतीय इतिहास लेखन में राष्ट्रीय स्तर व राज्य स्तर पर शोध व लेखन पर्याप्त रूप से हुआ है। पहले साम्राज्यवादी इतिहास लेखकों ने अपने लेखन से एक तरफा इतिहास लिखा। तत्पश्चात राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने राष्ट्रवादी इतिहास लेखन कर राष्ट्रीय स्तर तक सीमित रखा। कालान्तर में कर्नल टॉड जैसे इतिहासकारों ने राज्य स्तरीय इतिहास लेखन किया। हाल के कुछ दशकों में क्षेत्रीय व जातिय इतिहास को जगह देना प्रारम्भ किया है। किसी भी शासन का प्रभाव सबसे नीचे के स्तर पर पड़ता है। अतः स्थानीय इतिहास को प्रकाश में लाना एक वास्तविक इतिहासकार का कार्य है। इतिहास लेखन के इसी क्रम में पहले सिर्फ उच्च वर्ग तक ही सीमित था। किन्तु अब आम लोगों, जातियों का इतिहास लिखा जाने लगा। पिछले कुछ दशकों से राजस्थान में भी कई इतिहासकारों व विद्वानों ने इस ओर कार्य किया है।

राजस्थान अपनी सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक विशेषताओं के लिए प्रसिद्ध रहा है। भौगोलिक दृष्टि से राजस्थान का पश्चिमी भाग रेतीला है तो पूर्वी भाग मैदानी और दक्षिणी भाग पठारी। यह सभी क्षेत्र राजस्थान को विविधता प्रदान करते है। इसी राजस्थान का पश्चिमी भाग में स्थित मारवाड़ प्राचीन काल से ही एक महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा है। मध्यकालीन भारत में भी मारवाड़ अपने राजनीतिक, सामरिक और व्यापारिक महत्व के लिए जाना जाता था। आधुनिक काल में भी मारवाड़ अंग्रेजों के लिए बहुत महत्वपूर्ण स्थल रहा। इसी मारवाड़ राज्य का एक परगना सोजत था।

मारवाड़ का सोजत क्षेत्र भी सामरिक व व्यापारिक दृष्टि से महत्वपूर्ण था। पाली के नजदीक होने के कारण व्यापार का श्रेष्ठ केन्द्र था। वही मारवाड़ और मेंवाड़ के मध्य स्थित होने के कारण सामरिक महत्व का था। मेहंदी के लिए विश्वविख्यात सोजत में मानव के प्रमाण पाषाण काल से ही मिलने लग जाते है। इसी क्षेत्र से हूण, शक, पल्लवों के साक्ष्य भी मिलते है। मध्य युग में जब यह मारवाड़ राज्य का परगना था तब मुगलों ने भी यहां शासन किया। इससे पूर्व इस क्षेत्र पर प्रतिहारों का शासन रहा। मारवाड़ में जोधपुर के बाद किसी शहर का नाम लिखा भी जाता है तो सोजत का। सोजत आध्यात्मिक व सांस्कृतिक रूप से भी धनी है यहां कई प्राचीन मन्दिर व जलाशय है। ये मन्दिर व जलाशय यहां के निवासियों के लिए बहुत ही महत्व रखते है।

प्रस्तुत शोध पत्र में मारवाड़ राज्य के परगने सोजत के संक्षिप्त इतिहास व महत्व पर प्रकाश डाला गया है। जिससे इतिहास के पन्नों में एक कड़ी और जुड़ेगी।

सोजत :

मारवाड़ परगना री विगत भाग 1 में नैणसी के अनुसार पहले सोजत को त्रंबावती नगरी कहा जाता था। पंवार जाति का शासन आबू–अजमेर, किराडु, लुद्रवा, पुंगल आदि सभी जगहों पर था। सोजत पर भी त्रंबसेन नामक पंवार राजा के अधीन था। त्रंबसेन एक पुत्री सेजल थी जिसके नाम पर ही इस क्षेत्र का नाम सोजत पड़ा। कहा जाता है कि वह राजकुमारी देवी का अवतार थी। जब वह 8–10 साल की थी तब वह महल से आश्चर्यजनक रूप से देवी की भाखरी (जहां चौसठ जोगणीय क्रिडा करने आती थी) पर चली जाती थी। जब एक दिन रात्रि में पुत्री शयन कक्ष में अनुपस्थिति का ज्ञान राजा को हुआ तो उसने अपने प्रधान बांघरा हुल को

* Research Scholar, Department of History, Jai Narain Vyas University, Jodhpur

राजकुमारी का पीछा करने को कहा। हुल भी राजकुमारी का पीछा करते–करते उस भाखरी पर पहुंच गया। किन्तु इस बात का पता वहां क्रिडा कर रही देवियों को चला तो वे क्रोधित हो गई ऐसे में सेजल ने उस बाघरा हुल को श्राप देने लगी। तभी हुल ने बोला कि मैं तो राजा का सेवक हुं और राजा की आज्ञा का पालन कर रहा हुं। सेजल ने राजा को श्राप दिया कि उसका राज चला जाए और हुल को इस शर्त पर राजयोग का आर्शिवाद दिया कि वह सोजत में माता का मन्दिर बनाकर इस क्षेत्र का नाम माता के नाम पर रखेगा। इसी बाघरा हुल ने बाघेलाव तालाब का भी निर्माण करवाया। यहीं से कई वर्षो तक सोजत हुलों के अधिकार में रहा। सोजत पर हुलों के बाद राणाओं के अधिकार में रहा। उसके बाद यह जालोर के सोनगरा चौहान शासकों के अधीन रहा। तत्पश्चात सोजत पर सीथलों ने भी अधिकार किया जो मेवाड़ के राणाओं के अधीन थे। इसके बाद सोजत पर राठौड़ वंश का अधिकार स्थापित हो गया।

परगने के रूप में सोजत :

मारवाड़ में राठौड़ वंश की स्थापना राव सीहा ने की। इसके बाद राव आसथान, धुहड़, रायपाल, वीरमदेव इत्यादि हुए। वीरमदेव का द्वितीय पुत्र राव चूड़ा ने मण्डोर पर शासन किया। राव चूडा के दो पुत्र कान्हा व रणमल हुए। रणमल ने पिता के वचन के लिए कान्हा को मण्डोर आकर राजतिलक किया और स्वयं मेवाड़ के राणा मोकल के वहां चला गया। रावा रणमल को सोजत राणा मोकल ने अपनी ओर से दे दिया। जब राणा कुम्भा व रणमल के संबंध बिगड़ गए तब राणा कुम्भा ने एक फौज मण्डोर पर अधिकार हेतु भेजी जिसमें एक सरदार रावत रा. राघौदास सहेसमलोत भी था जिसे सोजत पट्टे पर दिया गया क्योंकि उसने मण्डोर पर अधिकार किया था। कालान्तर में राव जोधा ने पुनः सोजत पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार सोजत पर राठौड़ शासकों का आधिपत्य रहा। इन सब से ज्ञात होता है कि सोजत एक महत्वपूर्ण क्षेत्र था जिस पर प्रत्येक राजवंश अपना अधिकार करना चाहते थे। पाली के नजदीक होने से इसका व्यापारिक महत्व अधिक था।

सोजत कस्बे का सामाजिक जीवन

नैणसी कृत ''मारवाड़ परगना री विगत'' में विक्रम संवत 1716 (1659 ई.) में सोजत कस्बे की बस्ती में विभिन्न जाति व व्यवसाय के लोग निवास करते थे। इनमें महाजन, पंचौली, करसा, राजपूत, मुसलमान, बामण इत्यादि प्रमुख थे इनकी संख्या का उल्लेख निम्न सारणी में दर्शाया गया है।

कस्बा सोजत	
जाति	**संख्या**
महाजन	738
पंचौली	8
करसा	305
राजपूत	142
मुसलमान	72
बामण	364
कुल 6 जाति	**कुल जनसंख्या 1619**

इसके अलावा अन्य जातियों में सुनार, कुमार, जुलाहा, साटिया, न्यारीया, धोबी, सिलावट भरावारा, सरगरा, कलाल, भाट, लुहार, दर्जी, नाचण, सुथार, छीपा, वणकर, कंसारा, वेद, पींजारा, कारटीया, भाट, भड़भुंजीया, हलालखोर, नाई, मौची, ढेढ, खटीक, नायता आदि प्रमख थी। इनकी कुल संख्या 2254 थी। इसके अलावा राईका जाति के लोग भी सोजत में निवास करते थे। महाराजा विजयसिंह के समय वि. सं. 1821 (1764 ईसवी) सबला नामक राईका को सोजत क्षेत्र में 40 बीघा सावणु भुमि दिलवाने का हुकम राज्य द्वारा परगने के हाकम को दिया गया। साथ परगने के विभिन्न गांवों में राईका निवास करते थे। राज्य के सूतरसवार

संदेशवाहको का कार्य इन राईकों के द्वारा किया जाता था। इस परगने सोजत की प्रमुख फसलो में सावण और उनालु दोनो है इनमें बाजरी, जवार, मूंग, मोठ, तिल गैहू, मैंहदी, नीबू, तरकारी, आदि प्रमुख है।

उपर्युक्त जनसंख्या जाति आधारित थी। यह जनसंख्या केवल सोजत परगने के सोजत कस्बे की थी। सोजत परगने में कई गांव शामिल थे। महाराजा मानसिंह के काल में इनमें निम्न गांव शामिल थे। इन गांवों को निश्चित रेख (कर) पर पट्टे में दिया गया। 1801 ईसवी में जोधपुर शासक मानसिंह ने सोजत के निम्न गांवों के पट्टे जारी किये थे। इनमें सारण, वीलावास, धेनावास, लाडपुरो, सीसरवादा,सीहाठ, हरसाडो दाखली, अटबड़ों, कंटालीयों, रामासनी, भागेसर–जवासर, सबराड, बाघावास, पलासलो खुर्द, गागुरडो–खरडीयावास, रढावास, प्रेमसिंह रो गुडो, रूघनाथ रो गुडो, चंडावल, खोखरो, झुपेलाव, बासणो, माठो, भीवली, फुलीयों, मीलसा बावड़ी, पाणीयाली, ईसाली, महोकमसिंह रो गुढो, सीधासणी, हाफत राजोलो खुर्द, भोजावास, सुरसिंघ रो गुढों हेमलीयावास बड़ों, ठाकुरवास, सीचाणो, धण्लो–खेड़ा, सुरायता, भोरड़ीया, चेलावास, गोपावास, रेवड़िया, खारीयों फादरा, सापो, बगड़ी, सांडीयां, रायरो वडो, सउपरो, सांरगवास, नाथा रो गुढों, म्हेलावास, सालवदास रो गुडो, लांबोड़ी, सुरायता री बासणी, देवली हुलां री, पीपलाज, बड री बासणी, हरीयामाली, सझाड़ों गोडागडी, नाथलकुड़ी, हासलपुर खुरद्, बहालियों, बीचपड़, कैरखेड़ों, बाडसा, भैसाणों, चीरपटीयों, कुसलपुरो, जोगड़ावास, भीवालीयों, दुधोड़, रूपसी रो गुढों, रामावास, पातुवास, करमावास, दोयनडी बोल, बधराज रो गुढो, महाराजपुरो, नींबली मोढा री, खांभल, लुणकरण री बासणी, जाठण, हुणगांव, चाबड़ीयाक, खुटलीयां, भाणीयों, लोलावास खुरद्, राजोलो खुरद्, राजोलो बड़ो, हीगावास, भेंटनडों, मोडी, जोगड़ावास, डुंगर रो बास, बाघावास, नीबोलो बडो, नीसाणीयो, चूलेलाई, बीठोरा, सोवनपुरो, हासलपूर बड़ों खारीयो नीवा, मोडासो, बीरावास, पाचनडों खुरद, अखावास, धांगड़वास, महेव, गुजरावास, थारासणी, रूधीयो मैलाप, बासणी मुता री, खारीयो सोढा, पांचवो खुरद्, बुटेलाव, मोकल वासणी, पोटलीया, सीवाणीयों, हमीरवास, सीधपुरो, तांबरो, गुढो गरीबदास, मढलों, धनेड़ी पलासलों बड़ो, बीजा रो गुढो, गजनाई बड़ी–छोटी, अजीतपुरो, धोलेराव इत्यादि प्रमुख है। इसके अलावा कई गांव चारणों व पुरोहितो को दान में दिए गए थे जो सोजत परगने में आते थे।

सोजत का किला

सोजत का किला एक छोटी पहाड़ी पर स्थित एक गिरी दुर्ग है। इस किले में 10 घोड़ों के बांधने की पायगा थी। इस किले का एक ही प्रवेश द्वार है जिसे पोल कहते है। इस पोल का निर्माण नीबा जोधावत द्वारा करवाया गया। इस किले के नीचे एक परकोटा है जिसका निर्माण सुतौ तुरंका ने करवाया था। इस परकोटे में भी घोड़ा–घोड़ी बांधने का स्थान था। सोजत शहर के किले में हाकम, सरदार रहते थे। दुर्ग के भीतर 50–60 घर हुजदारा पंचोली ब्राहमण, पंडव (घोड़ों की देखभाल करने वाले) तथा नट भी रहते थे। परकोटे में एक पोल थी जिस पर दीवानखाना बना हुआ था। साथ ही नीचे कोठार भी था। किलें में एक बावड़ी भी है किन्तु उसकी दशा खराब है। किले के परकोटे में प्रथम पोल के पास में श्री चतुर्भुजजी का मन्दिर है। इसी के समीप गौतमगिरी जी सन्यासी की समाधि भी है।

जब सोजत पर मारवाड़ के राठौड़ वंश का शासन था तब इस किले की मरम्मत का उल्लेख मिलता है। महाराजा विजयसिंह के समय सोजत कोट की मरम्मत के लिए 1000/रूपये दिए गए थे। इसके लिए राज्य ने केलवाद के जागीरदारों को बकाया हुकमनामा के 1000/रूपये सोजत कचेड़ी में जमा करवाने के लिए कहा गया था। साथ ही राज्य ने 2000/रूपये और दिए किले की मरम्मत के लिए।

सोजत के प्राचीन मन्दिर :

जहां दुर्ग एक छोटी पहाड़ी पर बसा था वहीं सोजत शहर मैदान में बसा हुआ था। किले में जहां चर्तुभुजजी (चारभुजाजी) का मन्दिर व गौतमगिरी जी की समाधि थी। वही शहर में भी 8 शैव मन्दिर व 8 जैन मन्दिर थे। शैव मन्दिरों में चर्तुभुजाजी, लक्ष्मीनारायणजी, मुलनायकजी, पालालेश्वरजी, जोगेश्वर, नीलकण्ठ, सुरेश्वर, कपालेश्वरजी आदि का मन्दिर था। सोजत में सेजल माता का मन्दिर, भाखरी पर चावड माता का मन्दिर है। साथ ही हनुमानजी और सुरेश्वर, माणकेश्वर महादेव के मन्दिर भी है। जिन्हें राज्य की तरफ से वि. सं. 1821 महाराजा विजयसिंह के शासनकाल में 9 रूपये देने का हुकुम हुआ।

सोजत के प्राचीन जलस्त्रोत

सोजत में जल स्त्रोतो की दृष्टि से तालाब, बावड़ी, नाडा–नाडी, अरहट, बेरी आदि प्रमुख है। तालाबों में बघेवाल, रिड़मल तालाब, बाघेलाव इत्यादि प्रमुख है। इन्हीं तालाबों में बावड़ीया व बेरियां भी मिलती है। बघेवाल तालाब में 2 बावड़ी है जिसका पानी मीठा था। इसी तरह बाघेलाव तालाब में भी हरचंद द्वारा एक बावड़ी का निर्माण करवाया गया। इसी तरह हणवंत नाडी, पंचोल नाडो, पाबू नाडी, सीवाणो नाडो, परमेलाव, नीबली नाडी, कापड़ियों नाडो आदि प्रमुख है। अरहट की दृष्टि से सोजत में 2 अरहट है।

सोजत मारवाड़ का एक महत्वपूर्ण परगना था जिसके भीतर विभिन्न गांव सम्मलित थे। राज्य द्वारा परगने में हाकम नियुक्त किये जाते थे। हाकम परगने के गांवों में प्रशासनिक व राजस्व संबंधित कार्यों का निष्पादन करवाकर राज्य को रिपोर्ट भेजता था। उपरोक्त वर्णित जानकारी के अनुसार निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सोजत एक महत्वपूर्ण क्षेत्र था। जहां से व्यापारीक मार्गो का निकास होता था। सोजत एक उत्पादक व वितरक क्षेत्र है जहां से उत्पादित वस्तुएं अन्यत्र निर्यात की जाती थी। इस शोध से सोजत के संक्षिप्त इतिहास, राजनीति और संस्कृति पर भी प्रकाश पड़ा। इससे सोजत पर शोध कार्य निरंतर चलता रहेगा और भी कई नए पहलू निकलकर आएगें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिंह, फतह : मारवाड़ रा परगना री विगत, भाग 1, पृ, सं, 383–86, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, 1969
2. शर्मा, जी. एन. : राजस्थान का इतिहास, पृ. सं. 198, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी आगरा
3. सिंह, फतह : मारवाड़ रा परगना री विगत, भाग 1, पृ, सं, 386–88, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, 1969
4. भाटी, डॉ हुकुमसिंह : मारवाड़ के ओहदेदारों का इतिहास में योगदान, पृ. सं. 212,महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश शोध केन्द्र, मेहरानगढ दुर्ग, जोधपुर
5. सिंह, फतह : मारवाड़ रा परगना री विगत, भाग 1, पृ, सं, 391, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, 1969
6. भाटी, डॉ. विक्रमसिंह : परम्परा (महाराजा विजयसिंह : सनद परवाना बही) पृ. सं. 76, राजस्थानी शोध संस्थान जोधपुर, 2016
7. सिंह, फतह : मारवाड़ रा परगना री विगत, भाग 1, पृ, सं, 399, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, 1969
8. भाटी, डॉ. विक्रमसिंह : महाराजा मानसिंह मारवाड़ रा पट्टेदारां री विगत, पृ. सं. 222, राजस्थान शोध संस्थान, चौपासनी

9. (अ) भाटी, डॉ. विक्रमसिंह : महाराजा मानसिंह मारवाड़ रा पट्टेदारां री विगत, पृ. सं 222–248, राजस्थान शोध संस्थान, चौपासनी (ब) भाटी, डॉ. विक्रमसिंह : परम्परा (महाराजा विजयसिंह : सनद परवाना बही) पृ. सं. 8, राजस्थानी शोध संस्थान जोधपुर, 2016
10. सिंह, फतह : मारवाड़ रा परगना री विगत, भाग 1, पृ, सं, 390, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, 1969
11. भाटी, डॉ. विक्रमसिंह : परम्परा (महाराजा विजयसिंह : सनद परवाना बही) पृ. सं. 8, राजस्थानी शोध संस्थान जोधपुर, 2016
12. सिंह, फतह : मारवाड़ रा परगना री विगत, भाग 1, पृ, सं, 392, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, 1969
13. भाटी, डॉ. विक्रमसिंह : परम्परा (महाराजा विजयसिंह : सनद परवाना बही) पृ. सं. 73, राजस्थानी शोध संस्थान जोधपुर, 2016
14. सिंह, फतह : मारवाड़ रा परगना री विगत, भाग 1, पृ, सं, 383–86, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, 1969

❖◆❖